गंध हवाओं में

(काव्य-संग्रह)

मनीष पारीक

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 98290-18087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © मनीष पारीक

प्रथम संस्करण : अप्रेल, 2018

ISBN : 978-93-87831-55-1

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 495/-

GANDH HAWAON MEIN (POETRY) by Manish Pareek

उन तेजस्वी और ओजस्वी

प्रकाश–पुंजों को

जिन्होंने दुनिया को

प्रकाशित किया है

अनुक्रम

लय में–

तट के गहरे अंधकार में...	15
स्वयं निरंतर जुटकर	16
न बूंद गिरी न बर्फ जमी	17
व्यंजन स्वर से मिलकर बोल पड़े	19
प्यास का नाता	20
तितली जीवन तेरह दिन	21
पासबां–ए–इत्र	22
वो कहीं नही जाते वो फिर नहीं आते	23
कुछ और पल मोहलत	24
राजस्थानी खून खौलता	26
ये बिखरी सी जुल्फ़ें	27
तपन तेरी परछाईं तेरी	28
बात हुई थी दुनिया बसाने की	29
अंतरमन का उगता सूरज	30
तपती दुपहरी	31
और भी आने को है	33
दु:शासन जो चीर हरे	35
बदलते मौसम का मज़ा लीजिए	37
अहसास हुआ है मिट्टी	38
बूंद गिरी फिर नमी हुई	40
वसीयत हो चुकी है कर्ज़े चुकाने की	42
राजस्थान की सब गाथाएं	43
इन ठंडी हवाओं को सलाम	44
ज़िन्दगी रोज़ सिखाती है	45

एक-दूजे को समझाए क्यों	46
सादर	48
धुंध धुंधलका और धुआं	49
खुशियों का वजूद	50
भोग रहे हैं धरती को जो भाग्यवान हैं	51
खो जाए जो आस	52
साल के आखिरी दिन	53
अभिमन्यु सा	54
आह जो निकली	55
हुनरमंद हैं सदा खुदा के करीब	56
लाख असर जमाने पे है	57
किस से क्या कहें	58
ना क़ाबिले गौर है	59
जितना संभलता हूं	60
ना हर इंसान आजमाया जाता है	61
बांधकर पंखों को	62
ये क्या कमाल हैं	63
उगा हुआ आदमी	64
सबके लिए है खुला आकाश	65
चमक जो रोशनी की है	66
फ़िराक में रुआब के	67
क्या वसंत आया था	68
इजाजत	69
खुशबू हैं यादें	70
अपने आप में मिलती है	71
दुपट्टा दांतों तले	72
कुछ खामी रही	73
जो शिकायत रहे जहां से	74
तलबगार हूं	75
तकिए की तितलियां	76
वक्त का सबब	77
दोस्तों की दुश्मनी	78
ज़िंदगी में तमाम	79
ख़याल तेरे	80
बच के निकलोगे	81
दुनिया अगर सुहानी है	82
जिक्र है ना फिक्र है	83
मुस्कुरा के कह दिया	84
प्यासा ही रहे	85
किसे दोगे	86
कितने अकेले हैं हम	87
जो ना समझे	88
पत्र हरे हैं	89
चेहरे को ताकते हैं	90
नहीं सुनता सदा	91
आनन्द ताल में	92
होते हैं लोग क्यों	93
बल न गया	94

अतुकांत-

दोस्त	97
कुर्सी	98
जंगल	100
लज्जा राखो गोबिंद	102
वक्र गति; सद् गति	103
बातें	105
आओ हम दिखें समझदार	106
भले लोग	108
मिट्टी के पहाड़ों पर टंगे गोल पत्थर	110
क़िस्मत शहर की	112
अलग इज़्ज़त, अलग लिहाज़	114
आग्रह और दुराग्रह	116
आकाशवाणी की उपज	117
एक पैगाम है जो देना है	119

भूमिका

समाज में लोकप्रिय अपने किसी चिर-परिचित व्यक्ति के बारे में जब अकस्मात् यह सूचना मिलती है कि वह कविता भी लिखता है तो अपरिमित खुशी के साथ ही उसकी कविताएँ पढ़ने की भी उत्सुकता पैदा होती है। सन् 2012 में मनीष पारीक के काव्य संग्रह 'आधा पन्ना पूरी बात' के लोकार्पण का समाचार मिला तो अपार हर्ष और विस्मय हुआ कि जिस मनीष पारीक के गायन को सुनकर मैं अनेक बार मंत्रमुग्ध हुआ हूँ और उनकी वह मर्मस्पर्शी आवाज मेरी स्मृति में सदा सुरक्षित रहती आयी है, वही मनीष पारीक कविता भी लिखते हैं। क्योंकि अनेक कार्यक्रमों, गोष्ठियों और सभाओं में मैं उनकी कंठमाधुरी का रसास्वादन कर चुका हूँ।

खैर, बात आई-गई हो गई और मनीष की कविता देखने का अवसर ही नहीं मिला। हाँ, मेरी उत्सुकता ज्यों की त्यों बनी रही। और अब, जब अकस्मात उनकी पहली कविता पुस्तक 'आधा पन्ना पूरी बात' तो मेरे हाथों में है ही, उनकी रचनाशीलता के नैरन्तर्य का साक्ष्य देती उनके दूसरे काव्य-संकलन 'गंध हवाओं में' की पांडुलिपि भी मेरे सामने है।

गायन कला में निपुण और आकर्षक आवाज के धनी मनीष की अधिकतर कविताएं ग़ज़ल और गेय काव्य के शिल्प में है। पांडुलिपि देते समय मनीष ने जब ग़ज़लों और गीतों के मुखड़े स्वयं की आवाज़ में गाकर सुनाए तो समय ठहर-सा गया। मैंने महसूस किया कि इन रचनाओं को इनकी ही आवाज़ में सुनना सचमुच एक विलक्षण अनुभव है।

युवा कवि मनीष पारीक सार्वजनिक जीवन में राजनीति के साथ ही अनेक सामाजिक संस्थाओं में एक दायित्वपूर्ण कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय हैं। राजनीति जैसे अत्यधिक लोकमान्य, लोकलुभावन और जन जुड़ाऊ माध्यम में सक्रिय व्यक्ति का साहित्य सर्जना की ओर प्रवृत्त होना एक सुखद लक्षण है। यह हमें आशान्वित और

आश्वस्त करता है कि राजनीति के अनेक दांव-पेंच और आरोह-अवरोह के बीच मानवीय संवेदना का एक रागदीप्त कोना अपनी सहजावस्था में सुरक्षित है, जहाँ से जीवन-मूल्य और मानवीय गरिमा की सुवास फैलती है। 'गंध हवाओं में' इसी सुवास का सु-परिणाम है।

इन कविताओं में एक ओर राष्ट्रभक्ति के संस्कार हैं तो दूसरी ओर मनुष्य की जिजीविषा और उसकी गरिमा का बोध है। संवेदनशील कवि मनीष पारीक की रचना में न परिवेश छूटता है और न परम्परा। वह एक ओर अपनी कविता में हाड़ी रानी, पन्नाधाय, पद्मिनी और मीरा को याद करते हैं तो दूसरी ओर 'तपती दुपहरी' का यथार्थ बोध भी सहेजते चलते हैं। पर्यावरण के प्रति सजग मनीष की बेचैनी भी यहाँ लक्षित होती है, जब वे पूछते हैं- 'माटी जो बेच दी, फिर पानी खरीदोगे'।

आशा की जानी चाहिए कि मनीष अपनी इस सर्जन-यात्रा में और आगे तक जायेंगे। वे प्रतिभाशाली तो हैं ही, समकालीन साहित्य का सतत अनुशीलन उन्हें सर्जनात्मक उत्कृष्टता की ओर भी ले जाएगा। इन्हीं आत्मीय शुभकामनाओं के साथ-

-इन्दुशेखर 'तत्पुरुष'

अध्यक्ष

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

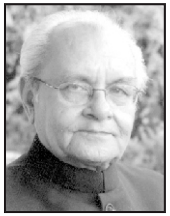

डॉ. हरिराम आचार्य
राष्ट्रपति सम्मानित

आशीर्वचन

मैंने कभी वाग्देवी सरस्वती से एक प्रार्थना-गीत में मांगा था-'बोलें कम, पर कहें अधिक, ऐसे उजियाले अक्षर दे माँ।' कम शब्दों में पूरी बात कह जाने की शक्ति ही व्यंजना शक्ति है, जो अच्छी कविता का मर्म भी है और धर्म भी लेकिन यह शक्ति किसी अज्ञात की कृपा और अथक साधना से ही मिल पाती है।

ग़ज़ल फारसी से उर्दू में आई एक साहित्यिक विधा है, जिसकी एक 'बहर' होती है, जिसे निभाते हुए शेर कहे जाते हैं। मनीष के लहजे में उर्दू के अल्फ़ाज़ है, तख़ल्लुस है, शेर का लिबास है। कविता के उन्मुक्त कलेवर में बहुत-कुछ समाहित किया जा सकता है। एक विचार, एक उद्‌गार, छंद-अछंद, गीत-अगीत, क्रम-अक्रम यानी सब-कुछ जो सहज अभिव्यक्ति में शब्दबद्ध किया जा सके। स्वयं कवि ने लिखा है-''मेरे शब्दों को कविता न कहें, इन निरे शब्दों को पढ़ने के बाद जो प्रश्न, जो भाव आपके मन में बनेंगे, वो ही मेरी कविता है। ...अपने सार्वजनिक जीवन में रोज़मर्रा की मर्यादाओं और आनंद के साथ हुए अनुभवों को मन की भाषा देकर सहजता से लिख दिया है।'' इतनी स्पष्ट स्वीकारोक्ति के बाद कवि मनीष की काव्य-रचनाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी करने की कोई आवयश्कता ही नहीं रह जाती।

(पहली पुस्तक की भूमिका से)

आत्मिक सौंदर्य से सराबोर कविताएँ

मनीष पारीक को अगर आप एक राजनेता या सामाजिक कार्यकर्ता की तरह ही जानते हैं तो यह पहचान अधूरी है। वह मूलत: एक संवेदनशील रचनाकार हैं, जो संयोगवश राजनीति के क्षेत्र में भी हैं। उनके पास न केवल कवि हृदय है बल्कि सांसों में संगीत भी गहराई से रचा-बसा है। बिना किसी वाद्य के भी उनका गायन शब्द-दर-शब्द श्रोता के मर्म को स्पर्श करते हुए अमिट छाप छोड़ता है। प्रस्तुत संग्रह में पारीक की रचनाएं अच्छे की कामना के लिए रचे गए हार्दिक शब्द हैं। दुनिया को खूबसूरत बनाना उनका खूबसूरत सपना है और इस सपने को पूरा करने के लिए वे हर किसी उचित माध्यम का उपयोग करते हैं। उनके लिए कविता राजनीति नहीं है, लेकिन राजनीति को वे कविता की तरह देखना चाहते हैं। संवेदनशीलता, इंसानियत, सहजता, अपनापन और आपसदारी उनके काव्य का मूल भाव है। इन रचनाओं को इसी सद्‌भावना के साथ पढ़ा और समझा जाना चाहिए। इस संग्रह की रचनाएं सामाजिक, राजनैतिक पूर्वाग्रहों से मुक्त एक ऐसे कवि की रचनाएं हैं, जो जगत को समग्रता में देखने में विश्वास करता है। जब मनीष कहते हैं कि-

सब कितना सुहावना सौंदर्यपूर्ण है
आंखों के प्रेम से सब माधुर्यपूर्ण है।

तो उनकी मानवतावादी दृष्टि और जगत के प्रति गहरा विश्वास साफ-साफ दिखाई देता है। आशा, विश्वास, स्नेह, अपनत्व, साझापन, प्रकृति और आत्मिक सौंदर्य यह सब पहलू मनीष पारीक की कविताओं में दिखाई देते हैं, इसलिए यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि पारीक, जो कि 'हम' उपनाम से लिखते हैं, पूरी तरह सामूहिकता में विश्वास करने वाले सकारात्मक रचनाकार हैं। इस प्रस्तुति पर मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं।

-मायामृग

लेखकीय

आपका आभार व्यक्त करने को दूसरी बार प्रस्तुत हूँ कि आपने अपने पढ़ने-विचारने और प्रतिक्रियात्मक प्रोत्साहन के लिए मेरे दूसरे कविता संग्रह को चुना, आपने पढ़ने के लिए मुझ पर विश्वास किया, आपका यह भरोसा ही मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। मेरे शब्दों को कविता ना कहें, इन निरे शब्दों को पढ़ने के बाद जो प्रश्न, जो भाव आपके मन में बनेंगे वो ही मेरी कविता है। इसलिए मैं लिखने वाला जरूर हूँ, पर कवि आप ही हुए। वैसे भी हवाओं पर जोर नहीं होता।

हवाओं को बांधा नहीं जा सकता, बस आप अपने हिसाब से गंध लीजिए।

उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरे अंतर्मन को जागृत रखा और इस सलौनी दुनिया को ज्यों कि त्यों स्वीकार करने की ईमानदारी मुझ में पैदा की।

चालीस बरस की ज़िंदगी में ये ही समझ पाया हूँ कि मुझे लोगों से प्यार है, मैं लोगों के बिना नहीं रह सकता। लोगों की चाहत ही मुझे खुश रखती है और इसीलिए मैं 'हम' जैसा हूँ।

मैं उन सभी अच्छे लोगों को प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने इस दुनिया को खूबसूरत बना रखा है। मैं तमाम बुरे हालातों का भी शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने मेरी नजर में लोगों को अच्छा और समझदार बनाए रखा है। मजबूती का आधार तो है ही।

संसार के सबसे बड़े सांस्कृतिक राष्ट्रवादी संगठन की उदारता की मिसाल भी ये रचनाएं हैं कि लगभग आधी ज़िंदगी इसके साये में रहने और पूरी तरह उसके आवरण में रहने के बावजूद मेरी निजता बिल्कुल महफ़ूज रही और विचारधारा में आबद्ध तो मैं हूँ ही। अपने सार्वजनिक जीवन में रोजमर्रा की मर्यादाओं और आनंद के साथ हुए अनुभवों को मन की भाषा देकर सहजता से लिख दिया है। प्रकृति, संगीत और

मानवीय संवेदनाएं मुझे सर्वाधिक आकर्षित करती हैं। निशदिन सक्रिय रहने की अपनी सीमा के बीच साथ देने, साथ रहने, साथ चलने और साथ बढ़ने के ध्येय को पुष्ट करती परिस्थितियों के बीच जीवन चलता रहे, यही कामना ईश्वर से करता हूँ।

अपने माता-पिता, धर्मपत्नी, परिवारजनों, रिश्ते रखने वालों और मित्रों को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने सदा साथ निभाया और मुझे सहूलियतें दी, जिससे मैं, मैं बना रहा। डॉ. रामसहाय पारीक एवं श्री मायामृग का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि वे मेरे जैसे को भी लिखने-छपने को प्रेरित कर सके। बोधि प्रकाशन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि उन्होंने मेरे टूटे-फूटे शब्दों को सुन्दर पुस्तकाकार दिया है।

सोशल मीडिया युग में पुस्तक आपको पसंद आएगी और लिखने-पढ़ने का काम जारी रहेगा। इसी आशा के साथ-

आपका

-मनीष पारीक

लय में

तट के गहरे अंधकार में...

फिर कल शाम इक लहर को छू कर आ गया
झील की बूंदें दरिया को दे कर आ गया

फिर भरोसा फिर उम्मीदें, फिर वही अहतराम है
जो था दिल मे एक कछुवे को कह कर आ गया

कुछ सीपियाँ थीं घोंघे थे, कुछ गोल से पत्थर
मोतियों की आस में फिर घर ले कर आ गया

मांझियों के गीत और शोर लहरों के ज़हन में
तट के गहरे अंधकार में दीप धर कर आ गया

महज़ साथ चलने से कोई साथ रहता नहीं
फिर किसी बेगाने के साथ चल कर आ गया।

स्वयं निरंतर जुटकर

स्वयं निरंतर जुटकर होती शक्ति की आराधना
सहेजना कठिन शक्ति को फिर अपने हित बांटना

स्वयं के लिये कठोर और उदार दूसरों के लिए
स्वयं से प्रारम्भ करते दूसरों के लिये जिए

मुस्कुराकर तंज़ सहकर शक्ति संग सहकार है
राष्ट्र के लिये परीक्षा नित नई स्वीकार है

है कठिन सहेजना प्रतिदिन की एक प्रार्थना
समय पर एक निर्णय हेतु साधना को थामना।।

न बूंद गिरी न बर्फ जमी

न बूंद गिरी न बर्फ जमी
सूरज चमका न हवा थमी
ये चांद देखने अम्बर पर
बैठी रहती ज्यों सदा ज़मी

बरखा बरसे देर सबेर
ज्यादा थोड़ी समय का फेर
छेड़ा जो धरती का आंचल
मौसम में घट गई नमी

सोने से काटी हरियाली
तपन रही न जाने वाली
चाहे जब तूफान थाम ले
आपदाओं में नहीं कमी

खाद डाल के उगते सिक्के
हर गेंद से चाहे छक्के
अपने घर की खुशहाली से
आये शहर में चाहे ग़मी

ताक़त को बढ़ता देखे है
रिश्तों को तकता देखे है
घर के कमरे कम पड़ते तो
फसलों को भी नहीं ज़मीं

जो देखो पर्वत चाहे है
बादल से उफने आए हैं
श्रद्धा समर्पण धूल हुए हैं
प्रीत प्रेम में नहीं रमीं

दाम बढ़ चले चीजों के
हम वारिस थे बीजों के
सरेआम नीलाम हुए पर
आशा तृष्णा नहीं थमीं।

व्यंजन स्वर से मिलकर बोल पड़े

व्यंजन स्वर से मिलकर बोल पड़े
अक्षर मात्रा से मिल कैसे वाक्य जुड़े
ढाला खुद को अभिव्यक्ति ने भाषा में
रिश्तों में अनुभूति किस्से खोल जड़े

बने कहानी किस्से कविता ग़ज़ल हुई
आंखों से अंगों से भाव अभिव्यक्ति छुई
मन का टूटा मौन बोलते तन भी भाषा
समझ गए मन की भाषा फिर बात नई

मिलकर शब्द नए कैसे वाक्य हो गए
पन्ने पर आकर गद्य पंक्तिबद्ध सो गए
नाच बोलते गले लिपटते भावभरे है जो
काग़ज़ पे काव्य आलिंगनबद्ध खो गए

ऐसा अध्ययन मित्र बने जो जीवन में
समझ बढ़े स्तर हो जाए जन-मन में
सुखद जीवन को खोज रहे जो साधन
अर्थ मिले अभ्यास मिले इस भू वन में।

प्यास का नाता

प्यास प्यास का नाता है
दिन दिन बढ़ता जाता है

जीवन टपके दिन रैन
अंजुरी भर बच जाता है

खेले जब हालात खुद
कोई न जीत पाता है

है नसीब का लेना देना
कौन किसे दे पाता है

छोटा लम्हा बड़े प्रेम का
पल भर में बीत जाता है

रिश्ते रिश्ते इतने रिसते
कोई कोई जी पाता है।

तितली जीवन तेरह दिन

तितली जीवन तेरह दिन
हल्की सुन्दर और रंगीन
भरे रंग देव ने स्वयं
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् गिन

उपवन वाटिका बगीचा उद्यान
पहाड़ जंगल पठार मैदान
दूर रहे इनसे शैतान
नज़दीकी से काम तमाम

अजगर जिए सैकड़ों साल
भय भूख का अनंत जाल
सुस्ती उदासी रहे बेताल
निगल जाए जब हो बेहाल

विकल्प ख़ुशी और ग़म के सारे
अपने अपने पास है प्यारे
हलके हृदय या मन पे भारे
तेरे करम के अंकन सारे।

पासबां-ए-इत्र

पासबां-ए-इत्र के तलुवों की बू दब जाएगी
चांद पाने की ये सीढ़ी कीचड़ से ही जाएगी

मिले मौका चमक पड़ूं फ़िराक ए रोज़गार है
रोशनी में ज़लालत की, रोटी जो खाई जाएगी

अहसास-ए-असलियत इस कदर ज़माने को
चांदी के लिहाफ में मिट्टी तलक बिक जाएगी

पूछते हैं मर जाएं क्या हम जो क़ाबिल न हुए
लीजीए दो चार आने ये ज़िन्दगी कट जाएगी

कीजिये इंतज़ार इनके हश्र-ए-ज़लील का
होंगे नहीं शर्मिंदा गर्दन नई उग आएगी

जमा कर लिए हीरे मोती कत्ल-ए-कूव्वत कर
इनकी बीबी रोज़ अब दो चांद सितारे खायेंगी

मुस्कुराते हैं रोज़ अपनी इस फ़ज़ीती पर
ये फ़रामोशी ही तो इनको ज़िंदा रख पाएगी।

वो कहीं नही जाते वो फिर नहीं आते

सुर्ख लिबास मटमैली आंखें भर जाते
हल्के दिल भारी बातें छू कर हंस पाते
भीगे नयन सूखे होठों की परतें छुपाते

इंसान के भरोसे दिन लम्हे ठग ले जाते
तबियत होने तक सच्चे फिर झूठे नाते
क्या खुशनुमा रहते हालात बदल जाते

दिल आने पर जी उठते सब रिश्ते नाते
दिल भर जाने पर बचती ज्ञान की बातें
सोये रहते दिमाग जब तक दिल चिल्लाते

रहने दो प्यार की मीठी बातें
वो रह नहीं पाते वो फिर नहीं आते।

कुछ और पल मोहलत

बड़े आदमियों की छोटी सोच
और छोटे किस्सों की बड़ी मार
अवसरों की तलाश में प्रतिभाएं
मलाल करते असफल हिस्से
आगे बढ़ते किस्मत के किस्से

हर तरफ नदी सी उफनती उम्मीदें
छोटी ज़रूरत की बड़ी बड़ी मांगें
मौका पाये खुशनसीब आदमी
बदलते आदमी ठहरे हुए से हालात
ख़ुशी के माहौल में उदास जज़्बात

दुश्मनी जैसे ख़ुशी की ग़मों से
आदमी बहाना असल लिखी के
कीमत चुकाते समझौते सभी के
बदलाव मांगती अजीब उलझनें
साथ रहती जैसे दिल में धड़कनें

अच्छे बुरे के बीच झूलती कहानी
बुढ़ाता मालिक गुलाम की जवानी
फायदा ही सोचते मगरूर आदमी
ज़िन्दगी मौसम की थोड़ी मोहलत
अपना हिस्सा देती पैसे को मेहनत।

राजस्थानी खून खौलता

राजस्थानी खून खौलता धीमी मद्धम आंच पर
तुले हुए हैं आहत हम अब नस्लों की जांच पर

हाड़ी रानी नव विवाहित क्या प्रेरणा रखती है
युद्ध विमुख प्राणनाथ को शीश काट दे सकती है

पन्नाधाय राज धर्म बचाने को क्या कर सकती है
रक्षा को राजवंश वो निज पुत्र तक कटा सकती है

रानी पद्मिनी ही जैसे बस एक सच्ची रानी है
लज्जा संग वीरता है ये बलिदान कहानी है

महल छोड़ जो बनी भक्त वो मीरा कहलाती है
ईश्वर को पाया जा सकता भक्ति याद दिलाती है

पानी जितना गहरा मानुष रक्त जैसे पानी है
जननी सदा सृष्टि संहारक सन्देश राजस्थानी है

पर बकरी के दूध पीते बकरे तक कट जाते हैं
छुटपन से पशुरक्त बहाते ये भांडों को डराते हैं

मरी आत्मा लेकर लेकिन जो जीवित रह जाते हैं
विधर्मी भयभीत भोग–लोभी वो कायर कहलाते हैं।

ये बिखरी सी ज़ुल्फ़ें

ये बिखरी सी ज़ुल्फ़ें कांधे पे तेरे
इन्हें बादलों सा पाया है मैंने
ना बरसे सदा ये ज़रूरी नहीं है
इन्हें आगे सूरज के पाया है मैंने

साया रहे जो धूप लगती नहीं है
मौसम की राहें बदलती नहीं है
लरज़ते लबों पर जो था गीत तेरे
तरन्नुम सजा के ही गाया है मैंने

चमकते माथे सजी थी जो बिंदिया
बेला चमेली ने उड़ाई थी निंदिया
सिरहाने लगा के जो ख़्वाब रखे
सवेरे उनसे सूरज उगाया है मैंने

चमकते गालों पे किस्मत सजी है
खुशियां जो आंगन उतरती नहीं है
बिखराने खुशबू इन्ही दायरों मे
तुझे मुस्कुराने बुलाया है मैंने।।

तपन तेरी परछाईं तेरी

तपन तेरी परछाईं तेरी
महफ़िल तेरी तन्हाई तेरी

मायूस है खुशनुमा अब
शोखी बनी रुसवाई तेरी

शिद्दत सब हवा हुई है
मुद्दा है जमुहाई तेरी

वफा मेरी दफन हो गई
चौराहे पर बेवफाई तेरी

लानतों को कौन गिने है
हर तरफ बस दुहाई तेरी

मिलना मिलाना भूल गए
याद रही एक जुदाई तेरी।

बात हुई थी दुनिया बसाने की

बात हुई थी दुनिया बसाने की
इज़ाज़त ले गया मुझे सताने की

कोई ग़ज़ल, नज़्म, शायरी न हुई
क्या ज़रूरत महफ़िल में जाने की

दूर तलक कोई हालात न थे
आदत पड़ी थी मुकर जाने की

बांट दिया था अपने अपनों को
फ़िक्र थी उसे सारे ज़माने की

कमज़र्फ़ी का आलम इतना था
गुंजाइश तक नहीं थी मुस्कुराने की

पेट कभी उसका भरते न देखा
कमी नहीं थी घर में खाने की

मुहब्बत में मुंह दिखाई हुई ऐसी
जली नहीं शमा फ़िक्र में परवाने की।

अंतरमन का उगता सूरज

अंतरमन का उगता सूरज रोज़ भरोसा देता
नित निशा की धवल चांदनी चांद है बिछा देता

जितनी गहरी काली रातें उतने चमकते तारे
ज़मी दिखाई देती न हो नभ में अटके सारे

इक्का-दुक्का नहीं रात में बिखरे दिखते सारे
चांद चमकता पर प्रकाश से तारे दिखते प्यारे

जीवन तत्व के रहस्य सब सत्य नही ये देखो
सुख संतोष मूल मंत्र है गुणीजन ऐसा कहते
ये संसार नाम प्यास का रोज़ है बता देते
दौड़ रहे जो प्यासे वो फिर सफल क्यों रहते

धन-बल काहे बना प्रमुख जब दया धर्म का मूल है
भले आदमी के पग-पग पर उगे हुए क्यों शूल है
कलयुग जब है नाम अधारा सुख सुविधा क्यों फूल है
निस्वार्थ कर्म करना भी क्यों इन दिनों भूल है।

तपती दुपहरी

तपती दुपहरी
या शाम सुनहरी
ये दिन और रातें
मौसम आते–जाते

सुख और सुविधाएं
कोई खोये कोई पाए
मौसम आये जाए
कौन किसे समझाए

जीवन एक पहेली
ना दोस्त न सहेली
सब हैं रिश्तेदार
सदा साथ तैयार

कर ले सो काम
भज ले सो राम
जी लो सो ज़िन्दगी
बस इतनी सी बंदगी

क्या झूठ क्या सच
सब कुछ जाता पच
क्या तेरा क्या है मेरा
इस दुविधा से बच

जोग लिखी के खेल
जीवन रेलमपेल
क्या रखे हैं गिन
मौसम चार दिन

धरती ऊपर आसमां
कौन किसका पासवां
वक्त जायेगा बदल
आज नहीं तो कल।

और भी आने को है

और भी आने को है
दुश्मन दिखाने को है
जाजम बिछाने को है
हमें आजमाने को है

तीर चलाने को है
बातें भुलाने को है
फिर मान जाने को है
इतिहास दोहराने को है

दूर पास जाने को है
जलने-जलाने को है
शमां परवाने को है
अपना कहाने को है

हमको सताने को है
शोला भड़काने को है
बातें मनवाने को है
सदा मुस्कुराने को है

आपको बताने को है
हमसे छुपाने को है
लम्हे चुराने को है
यूं ही बीत जाने को है।

अरमां सताने को है
जोड़ा घटाने को है
अपना बनाने को है
फिर मुकर जाने को है

कहानी बताने को है
किस्से कहाने को है
कविता सुनाने को है
गीत गुनगुनाने को है।

दु:शासन जो चीर हरे

दु:शासन जो चीर हरे दुर्योधन जंघा हाथ लगाते
लज्जित द्रोपद भरी सभा में अर्जुन पांडव दुख हैं पाते

पांच भले तो सौ बिगड़े हैं, येड़े बनकर पेड़े खाते
जिनके पीछे पड़े दरोगा मोटी मूंछें वर्दी पाते

बुरे कर्म का फल देने को अच्छे कारिंदे ढूंढे जाते
लंदन के ये पढ़े कायदे भारत की है तनख्वाह पाते

एक परीक्षा से हाकिम हो गलत–सही का भेद सिखाते
किस्मत जिनकी भेद कराए वे नसीब का भेद मिटाते

लकीरों की नजीर पे रोज़ फैसले सुनाये जाते
भुगते कोई और के कारण हालात की साज़िश बताते

अपराधशास्त्र की बंदिशों पर मनोविज्ञानी ग़ज़ल सुनाते
लालन पालन संग कुसंग के हालात हैं बताए जाते

इन किस्सों के इर्द–गिर्द ही हम अच्छे–बुरे कहलाते
प्यासा जीवन झूठा झांसा सुख–सुविधा के भोले नाते

रोज़ चढ़े फांसी फिर भी दुष्कर्म पांच गुना बढ़ जाते
क्षतिपूर्ति मानव हाथ में बाकी सारी भाग्य की बातें

गांव खत्म और शहर भरे हैं, ऐसे कैसी रोटी खाते
मैय्या तेरे बच्चे गंदे जबकि हैं ये रोज़ नहाते।

बदलते मौसम का मज़ा लीजिए

बदलते मौसम का मज़ा लीजिए
पत्ते गिर रहे हैं क्या सजा कीजिए

सुर्ख थे जब भी थे अब नहीं है
उम्र उनकी हुई है भुला दीजिए

सोचते थे के वो न गिरेंगे कभी
जो उगे हैं गिरेंगे बता दीजिए

सूखे हैं, सख्त हैं, बेरंग हो चले
नई सी सूरत नयों को दिखा दीजिये

घरौंदे बने डालियां मिल के कई
महज़ साये का क्या गुमां कीजिए

रोज़ की कहानी सूखते ही गिरना
जब तक कोशिश नम रहा कीजिए।

अहसास हुआ है मिट्टी

अहसास हुआ है मिट्टी
अहसास पानी बना है
अहसास हवा हो गया
अहसास शोला जलता हुआ

अहसास करे जो सही
अहसास सत्य है नहीं
अहसास रत्ती और माशा
अहसास मन छलता हुआ

अहसास जुल्म की कहानी
अहसास मुहब्बत की जवानी
अहसास दुआ में होता है
अहसास बच्चे पालता हुआ

अहसास दोस्ती गांठता है
अहसास प्यार बांटता है
अहसास ही दुश्मनी निभाये
अहसास रिश्ते मारता हुआ

अहसास में है जिम्मेदारी
अहसास हुई है दुनियादारी
अहसास खोने का बहुत बुरा
अहसास दिल को सालता हुआ

अहसास अपने पराये का
अहसास सुने सुनाये का
अहसास खुद की खोज का
अहसास रूह डालता हुआ।

बूंद गिरी फिर नमी हुई

बूंद गिरी फिर नमी हुई
मिट्टी भीगी तो ज़मी हुई
बीज सिक्त हो अंकुर हो गए
पात भीग कर पल्लव हो गए

गरम धरा तक तरी हो गई
भूरी मिट्टी अब हरी हो गई
वाष्पित कण तो बादल हो गए
सारे बच्चे ज्यों पागल हो गए

धरा प्रकृति की संतान हुई
गगन प्रीत घन श्याम हुई
ताल तलैया नद बांध कुएं
छलके ज्यों प्यासे तृप्त हुए

अब सूनी आंखें चमक गईं
है आशीर्वाद सी आस नई
बिस्वा बीघा तक हरे हो गए
कृश कृषक तन भरे हो गए

स्नेह नीर की बरसात हुई
धरती अम्बर की बात हुई
शब्द कवि के गीत बन गए
प्रेम प्रीत अब रीत बन गए।

प्यासे मन भी भीग रहे
इस तृप्ति पर रीझ रहे
ख़बर हुई कुछ पाने की
सबके खुश हो जाने की

अमृत जैसे बरसे जल
प्यासों को न जाए छल
प्रकृति प्रेम को पाने को
जतन करे आज और कल।

वसीयत हो चुकी है कर्ज़े चुकाने की

वसीयत हो चुकी है कर्ज़े चुकाने की
ज़रूरत है फेहरिस्त में नाम आने की

उजाड़ दी जंग ने बस्ती कभी की
जंग ज़ोरों पे है नक्शा बचाने की

मायूस है अब कभी नहीं बोलेगा
कीमत चुकाई है मुकाम पाने की

शक्ल ओ सूरत भी एक जैसी है
मुश्किल नहीं है पहचान पाने की

रसूखात इतने हो गए मुहब्बत में
एक ही थाली है दोनों के खाने की

तख्त ओ ताज का कोई वजूद नहीं
हुई है ऐसी ताजपोशी बुतखाने की

जिसे देखो मुर्दे में जान डाल रहा है
मची है होड़ काबिलियत दिखाने की।

राजस्थान की सब गाथाएं

राजस्थान की सब गाथाएं
आन बान के किस्से गाएं

मीठा स्वाद ज्यों बोली का
घेवर, जलेबी, फीणी खाएं
रणबांके माटी में उपजे
धोरे, किले, गढ़ आजमाएं

दुश्कर जीवन में भी उत्सव
चिरमी घूमर कुरजां गाएं
मानुष संकल्प में पर्वत सा
सांगा प्रताप ये याद दिलाएं

सूरजमल का तेज चमकता
गोरा बादल अमर कथाएं
गहरा जितना पानी मानुष
कण कण में है युद्ध ऋचाएं

नारी मन बेजोड़ रतन धन
हाड़ी, मीरा, पन्ना मन छू जाए
माटी सोना पानी अमृत
देवों सा जीवन जी आएं।

इन ठंडी हवाओं को सलाम

उस ठंडी हवा को सलाम जिसने मेरे पसीने सुखाए हैं
शुक्रिया ज़िंदगी तेरी मिठास का तूने लम्हों के बताशे बनाएं हैं

अहसान है हालातों का जो सिखाते मुझे खुद ग़म भर के
इस ज़माने में ऐसे भी कौन किसी के लिए आए-जाए है

बनता है मेरे निगोड़े मुक्क्द्दर को भी एक सलाम तो
छोड़ के दामन जो मेरा किसी ज़रूरतमंद के काम आए है

सलाम उन्हें ठोक के ताल जो अड़े रहे मुझे रोकने के लिए
वक्त अपना ज़ाया कर मेरे लिए नरम लिहाफ बनाए है

शुक्रिया उनका जिसने चुन लिए अपने नाकाबिल
यही वो ज़ुल्म-ओ-सितम है जो मुझे काबिल कहराए हैं

शुक्रिया उस रब का जो न दे के भी जो देता है
बढ़ा के मियाद-ए-बंदगी जो मेरी दुआओं में असर लाए है।

ज़िन्दगी रोज़ सिखाती है

जो ज़िन्दगी रोज़ सिखाती है
वो ज़िन्दगी आगे ले जाती है

सीखते हैं, खेलते हैं रोज़ हम
ये देख ज़िन्दगी मुस्कुराती है

न थके जो मेहनत से रोज़ की
आंचल में रख लोरी सुनाती है

रोज जो कर लिया इसको सलाम
ज़िन्दगी बाहें फैलाये बुलाती है

रोज़ नया लुत्फ हुआ ज़िन्दगी में
धीरे से बात ये इक दिन बताती है।

एक-दूजे को समझाए क्यों

गली-गली हालात अलग जो
एक राह पे जाए क्यों
जब ये समझ न आये तो
एक-दूजे को समझाए क्यों

सन्नाटे सुने जाएं जो
शब्द भी मुस्काएं जो
आहट चुपके से आए तो
सन्नाटे शोर मचाएं क्यों

पहले दूजा भाए क्यों
भाए तो फिर जाए क्यों
जाए फिर न आयें क्यों
यादों में मुस्काये क्यों

रीत सब निभाए ज्यों
खुद से ही डर जाए क्यों
अपनी बात बताये तो
ख़ुद ही बात छिपाये क्यों

अपनी लगती आए ज्यों
वैसी रहने पाए क्यों
आखिर इतना भाए तो
जीवन समझ न आये क्यों।

सादर

हर लड़ाई में वीर दो होते हैं
अगर ज्यादा न हों तो भी
हर राजपथ पर होती है सवारी
अगर पथिक न हों तो भी
कोई यहां जंचे तो सही

झुकते हैं सब कहीं न कहीं
पैदाइश की खानदान के
बिना लड़े जीते हुए जो
फिर पैदा होती है ज़रूरत युद्ध की
कोई इसे लड़े तो सही

मां के नसीब के बेटे राजपथ पे
कोई सलामी लेता तो कोई देता
जवाहर छिटक कर सरदार को
गांधी राजपथ पर नहीं चलते
कोई यहां समझे तो सही।

धुंध धुंधलका और धुआं

धुंध धुंधलका और धुआं
सुबह शाम क्या न हुआ

बदले मौसम बदले फ़ितरत
सर्दी गर्मी बरसात जुआं

पहाड़ भरे धुंध बादल से
मैदान कोहरे भरा हुआ

करने वाले मुंह ताके तो
किस्मत जैसे खाई कुआं

जैसे तैसे जिएं चैन से
आदमी की यही दुआ।

खुशियों का वजूद

खुशियों का वजूद सदा उम्मीद पे रहता है
जब तक रंग की डोली दीवाना रहता है

पलकें तक न झपके आंखें रूप सुहाना है
गहरे उतरे मन में बसता कोई खज़ाना है

रिसते जीवन मे भी रस को रहना होता है
जन्म धरापे देव की चाहत कहना होता है

गंध हवाओं में सपनों की रमी सी रहती है
नस नस में भी जैसे खुशियां बहती रहती हैं

कुछ भी नही है बस जैसे कोई परछाईं है
रूप रंग रस गंध मिला के दुनिया भायी है।

भोग रहे हैं धरती को जो भाग्यवान हैं

भोग रहे हैं धरती को जो भाग्यवान हैं
बाध्य बेबस मोहताज़ बस परेशान हैं।

राशन, पानी, बिजली इज़्ज़त बने बहाना
लंबी चौड़ी कोशिश तक भी पशेमान है

रोज़ी खेती व्यापार नौकरी सुविधा मांगे
बत्तीस दांत के जीभ बीच में मेहमान है

घर के बाहर न्हार-बघेरे, कुत्ते-बिल्ली
घर के अंदर सांप, कंछले शक्तिमान हैं

रोज़ वही चाराजोरी नाकामी फ़ितरत
सत्तर साल से सत्तर नखरे अरमान हैं।

खो जाए जो आस

खो जाए जो आस मगर तू फिर भी है
हो जाये जो नाश मगर तू फिर भी है

भूखे नंगे हाथ फैलाते तेरे आगे
कट जाए जो हाथ मगर तू फिर भी है

साथ चले सब तू जब रहता
कोई नही हो साथ मगर तू फिर भी है

गले लगाए जब जग तू दिखता
छोड़ दे सब जो साथ मगर तू फिर भी है

मंदिर मंदिर में तू मिल्या जाए
आ जाए शमशान मगर तू फिर भी है

वहम कल्पना भरम से आगे तू
सच्चाई में आम मगर तू फिर भी है।

साल के आखिरी दिन

जी भरकर जी लूं मन भरता नहीं
एक मन का जी बस भरता नहीं

कलेंडर बदलता है हर साल को
मगर उसका नसीब बदलता नहीं

तारीख पर तारीख एक सबर को
हाक़िम मगर फ़ैसला करता नहीं

फिर नया आएगा फिर दिल दुखेगा
ऐसे भी दामन कोई पकड़ता नहीं

सारी तोहमतें वक्त के नाम पर
इतना भी प्यार कोई करता नहीं

काग़ज़ पे लिखा है तो याद रहेगा
दिल के लिखे को याद करता नहीं।

अभिमन्यु सा

ना आस ने हिम्मत हारी थी, बस दूजे की बारी थी
कस कमान उठ तीर चला, अभिमन्यु सा वीर चला।

बचा रहा शकुनि जब, अर्जुन को ही बींध चला
ऐसा अन्त भला हो कैसे, ना तीर चला, ना वीर चला।

वीर है जो धीर है, एक लक्ष्य ही गंभीर है
मौन हुए हैं शब्द सभी, आंखों से बह नीर चला।

घोर तपस्या कलियुग की, दिखलाती है ये भी दिन
युग परिवर्तन शाश्वत है, तृण–युद्ध अति गंभीर चला।

आह जो निकली

आह जो निकली ग़ज़ल बन जायेगी
दिल की तल्खी होठों पे उतर जायेगी

तुम बस दिल की बातों को हवा दे दो,
सागर की मछली झील में चली आएगी

होगा तो कुछ नहीं इस भरी कायनात में
लुत्फ़ है, ग़ौर है, कलेजे में ठंडक आएगी

जिस पे ना बीती उसकी क्या बात करें,
बीत रही जिस पर असर दिखायेगी

दिल की बातों को कागज का पता देते हो
कश्ती जरूर 'हम' साहिल पे डूब जाएगी।

हुनरमंद हैं सदा खुदा के करीब

हुनरमंद तो ख़ुदा के करीब रहना है
महरूम को बस हुनर पैदा करना है

आ नहीं सके हुनर कोई बात नहीं
है हुनर कोई ये भरम रखना है

गुजर जायेगी ज़िन्दगी ऐशो आराम से
खुद से ही तो थोड़ा धोखा करना है

ऊंचाइयों पे कौन चल के जाना है
गुम्बदों से बस रिश्ता रखना है

जो है वो खामोश से वो और गहरे हैं
जो नहीं है 'हम' दिखावा करना है।

लाख असर जमाने पे है

लाख असर जमाने पे है तेरी यादगार से
फूल से रिश्ते हैं, चुभते हैं खार से

सुइयां चुभो के जो गुल गुजर गये
खिल रहे हैं कैसे, गले में हार से

मर गये थे जो किसी की बेरूखी से,
जी उठे है वो ही, किसी के प्यार से

जानते नहीं है, बस मुस्कराते हैं
पास आ रहे हैं, कितनी रफ्तार से

उसको पता नही, कितना जिया उसे
आवाज आ रही है, दिल के सितार से

जानते नहीं हैं, बस देख मुस्कराते हैं
पास आ रहे हैं, हम कितनी रफ्तार से।

किस से क्या कहें

किस से क्या कहें, किसको बताएं कुछ
हर आदमी ही कुछ और निकलता है

ठहरा हुआ है यूं तो खुद के पिंजर में
मगरूरी में उसको भी तोड़ निकलता है

दुखते दिल का हाल कहो नासूरों को
हंसते जिस्म को, कैसे फोड़ निकलता है

सीधे-सीधे रिश्ते हैं, चौड़े हैं चौराहे भी
ज्यों चलता हूं तो आगे विकट मोड़ निकलता है।

ना क़ाबिले गौर है

ना क़ाबिले गौर है यूं तो सदा हमारी,
जान ले के जाएगी पर, इक दिन ये तुम्हारी

ख्वाहिशो के मंजर, आंखों में ख्वाब हैं
किसी सूरत में नहीं थी तेरी मेरी यारी

ये जो चमक रही है, ये गैर का पसीना है
यूं ही नही रंगी है, चूनर सलमा सितारी

बात जो सही है, तो अकड़ना कैसा
गलत बात है 'हम' जो आंख में उतारी।

जितना संभलता हूं

जितना संभलता हूं उतना उलझता क्यूं है
जितना निभाता हूं उतना बिगड़ता क्यूं है

जितना चाहता हूं, हाथ से निकलता क्यूं है
जितना जोड़ता हूं, उतना दरकता क्यूं है

जितना पकड़ता हूं, उतना फिसलता क्यूं है
दिल अपना है, और के लिए मचलता क्यूं है

बिगड़े हुए हालातों में, आदमी संभलता क्यूं है
एक जैसे जिस्म में, रूह ये बदलता क्यूं है।

ना हर इंसान आजमाया जाता है

ना हर इंसान आजमाया जाता है
ना हर इंसान काम आता है
ये दुनिया का मंजर ऐसा है
यहां हर रिश्ता निभाया जाता है

हिसाब है कुछ अजीब जमाने का
बैर दिखाया औ' इश्क छिपाया जाता है
दुश्मन से कोई उम्मीद नहीं करता
पर अपना हमेशा आजमाया जाता है

बेवकूफों को है आजादी उम्र भर
हां अकल वालों को मगर सिखाया जाता है
बंदिशे अच्छों की लाख हो सकती है
बुरों को मगर सदा लुत्फ दिलाया जाता है।

बांधकर पंखों को

बांधकर पंखों को गरूड़ बैठा नहीं करते
कपोत सम गुम्बद पर कभी नहीं ठहरा करते

बड़े होने का मतलब होना कम तो नहीं
आलस का मतलब कभी श्रम तो नहीं
आंख चुराना है ये मजबूरी नहीं
अपने तक सीमित होना क्या बड़ा जताना है

समय अश्व काबू करने को सबने जतन किए
दूजा दिखा नही बस स्वयं मुग्ध नयन जिए
इस घड़ी के लिए ही क्या हमने प्रयत्न किए
जहरीली बूटी को क्यों निर्मल किरण दिए

पीड़ा नहीं भले ही शिकायतें तमाम हैं
सच में स्वयं से लड़ना जीवन संग्राम है
निपट स्वार्थ को अवसर नही पैगाम है
स्वयं सशंकित हीनता रूखी सदा गुलाम है।

ये क्या कमाल हैं

चंद सिक्के भी क्या कमाल हैं
अब आंसू ही बने खुद रूमाल हैं

मुकरे वो उसूलों से ये न मलाल है
अब कुछ गिरा सा उनका ज़माल है

आज तरक्की का समझौता दलाल है
अब मायूस है नमक, चीनी हलाल है

शर्मिन्दा जिनकी गैरत, बने वो मिसाल है
चांद पड़ा है थाली में ये क्या कमाल है

भूखे नहीं है वो पर प्यास बेमिसाल है
किन बे ख्यालो का 'हम' ये ख्याल है।

उगा हुआ आदमी

उगा हुआ आदमी फंसा हुआ आदमी
अपने वजूद में धंसा हुआ आदमी

जहन में रखकर और को सदा
खुद के दिमाग में बसा हुआ आदमी

ताम झाम सारे, खुद के ढीले रख के
बस गैर के लिए ही कसा हुआ आदमी

बेखुदी की आदत अपनी फिकर नहीं
अक्स में खुद ही के नशा हुआ आदमी।

सबके लिए है खुला आकाश

तेजस, अंतस, पुंज, प्रकाश, सबके लिए है खुला आकाश
जीवन प्रवास या सत्य प्रयास, जीवन दर जीवन सबक उल्लास।

मीरा, सूर, कबीर, रैदास, दूरस्थ ज्ञान के कितने पास
माता प्रकृति, अल्प प्रयास, जीवन महके पूर्ण विकास।

जीवन प्रेम का निपट विश्वास, आत्म आनन्दित, कामना त्रास
परहित कर्म बस स्वयं के पास, मानुष मानस प्रेम विकास।

सत्य चित्त का सबमें वास, सुख आनन्द हैं सभी के पास
जीवन चैतन्य कर्मफल नाश, कान्हा मुरली, राम वनवास।

शांत चित्त आनन्द अहसास, पूर्व निर्धारित या मानव प्रयास
देश काल फल, जन्म की आस, ध्येय सत्य और ज्ञान के पास।

चमक जो रोशनी की है

हंसी जिनकी लबों से, आंख तक जाती है
कुदरत भी इन्हीं को देख मुस्कुराती है।

मासूम चमक आंखों की, सितारों से बढ़के है
उतर कर आसमां से, सितारे गिनने आती हैं।

भला लगता है कोई, कुछ तो भला होगा
पर देखने की कला, भला किसको आती है।

मिसालें दे जो हर कोई, मशालें जलती रहती हैं
चमक जो रोशनी की है, वही दिल को लुभाती है।

दिया ज़र्रा तुझे तेरा, इसे तू ही संभाले रख
बुझाने हर तरफ से चिरागां हवायें आती हैं।

नज़ाकत दे ही दी है जो तुझे इंसानी फितरत की
ऐबो–हुनर को देखकर, खुदाई मुस्कुराती है।

फ़िराक में रुआब के

पन्ने सारे पढ़ लिए, जो उसने मेरी किताब के
औरों के लिए लिख दिए, हर्फ़ ये महताब के।

आसमां से जो टपकते, सब ज़मीं पाते नहीं
इन्तज़ार-ए-ज़िंदगी है, जैसे कोई ख़िताब में।

नूर की चादर बिछी है, हाथ मेरे कुछ नहीं
लूटने वाले बहुत हैं, उस आफ़ताब के।

ज़िंदगी पड़ी थी, चैन से जीने के लिए
काट दी बेसब्र होकर, फ़िराक में रुआब के।

जो मिला है शुक्र कर, जीने को बहुत है
चन्द कतरे ही बहुत हैं, 'हम' उसकी आब के।

क्या वसंत आया था

उसकी उंगलियों पे, पीले फूलों को सजाया था
क्या मौसम था, क्या वसंत आया था।

पीली पहन के चुनरी, वागेश्वरी को पूजा था
पीले चावलो से मां ने, मुंह मीठा कराया था।

प्रार्थनाएं सब समवेत बोली थीं
हर बच्चा इक फूल सा मुस्कुराया था।

महके हुए थे मन सबके, फूल भी खुश थे
रूप ने सुगंध से, रिश्ता बनाया था

लब मुस्कुराते थे और आंखें बोलती थीं
रिश्ता था कोई 'हम' मुहब्बत नाम बताया था।

इजाजत

लिख दूं दो बात, अगर आप इज़ाज़त दे दें
मेरे लफ़्ज़ों पे आपका साया बहुत है।

हंसने की कोशिश बहुत हुई मगर
आपकी अदाओं ने रुलाया बहुत है।

आदमी चाहे तो, कुछ कर नहीं सकता
हमसफर हैं कम, हमसाया बहुत है।

दोस्त भी बहुत रहे और मौसम भी
इसी मुहब्बत ने मुझे सताया बहुत है।

यूं ही गुजर जाएंगे, तेरे कूचे से ज़िंदगी
'हम' ही नहीं आये, तूने बुलाया बहुत है।

खुशबू हैं यादें

खुशबू हैं यादें, जो झोंके चलते हैं
तन्हाई में तेरे दामन से हो के चलते हैं,
गुज़र जाएंगे कभी इस मुकाम से हम
कुछ कलम गुलाबों की बो के चलते हैं।

शिद्दत थी जिनकी चाहत, वो कर गुजर गये
जी ना सके ज़माने में वो घर में मर गये,
रोशनी थी जिनके आंखों की आब भी
रोशन है वो शमा, बस परवाने जलते हैं।

चल ना सके जी भर के साथ वो
रास्ते में छूटा, उनका हाथ जो,
गुम भले हुए हो, अब तक आबाद है
'हम' आसमां के साये में, सितारों से पलते हैं।

अपने आप में मिलती है

होश है किसे और किसे खबर मिलती है
ज़िंदगी बस अपने आप में मिलती है।

अपने हो ख्याल में तो भी कोई बात नहीं
ये मुई आप ही आप में क्यूं मिलती है।

ज़िंदगी से सीखने का जज़्बा तो देखिए
ख़िजां भी यहां बहार में मिलती है।

कोई खरीदता है, क़ीमत चुकाकर इसे
बचे खुचों को उधार में मिलती है।

काट इसे ऐसे ही, या बना ले 'हम'
ज़िंदगी है, ये उपहार में मिलती है।

दुपट्टा दांतों तले

किसको पड़ी है यहां कौन सुनेगा
तुझको देगा कि, अपनी सांस लेगा।

मां की उंगलियां कभी चलना सिखाती थी
अब आदमी है होशियार खुद ही दौड़ लेगा।

उड़ा के लाल कपड़ा रेल रोकनी है
अब कौन है, जो दुपट्टा दांतों तले लेगा।

तहज़ीब पलती थी, कभी शहर के लिए
अब वो बच्चों का पेट भरेगा।

किसके लिए जमा कर रहा है दौलतें
कोई नहीं है, जो घर का पता देगा।

ये जितनी लिखी है, मायूसी नहीं है
कोई तो 'हम' हाथों में मशाल लेगा।

कुछ खामी रही

एहसासे कमतरी इस कदर थामी रही
हर एक शख़्स में कुछ न कुछ खामी रही।

रोज निकलते रहे, घर से कुछ करने के लिए
रोज नई गलियां उन्हें बुलाती रहीं।

पढ़ ना पाए थे जो, ज़िंदगी की किताब
परियां उन्हें जन्नत में बुलाती रहीं।

वे निकल गये थे मगरूरी में आगे।
ज़िंदगी उन्हें आवाज लगाती रही।

कर देंगे हर महफिल में 'हम' खुद को साबित
यही कमतरी ऊल-जलूल कराती रही।

जो शिकायत रहे जहां से

कुछ मुकम्मल जहां नहीं है, कुछ मुकम्मल लोग
ग़र मुकम्मल शिकायतें हैं, तो फिर उनको भोग।

जो शिकायत रहे जहां से, फिर जहां भर की शिकायत
कह ले सुन ले, कर दे सह ले, जीवन भर का रोग।

जो नहीं बर्दाश्त करना, सीख लीजे माफ करना
दुनिया की आपाधापी में, साधे नहीं कोई जोग।

दुनिया सुख की आस है, दुनिया दुख का सार
लेकिन 'हम' भले लगते हैं, हंसते-गाते लोग।

तलबगार हूं

आपकी खुशी का इतना तलबगार हूं
कि खुद के दर्द का गुनहगार हूं।

हो सकता है आपको भरोसा ना हो
पर मैं अपने आप में ऐतबार हूं।

रोज देती है ज़िंदगी उलझन नई
और मैं इन्हीं उलझनों में खुशगवार हूं।

पक के कट चुके हैं जो पुराने थे ख़याल
अब मैं नये ख़यालों की पैदावार हूं।

दुनिया के तूफानों से इतना रिश्ता है
हर किसी के साथ चलने को तैयार हूं।

तकिए की तितलियां

है नई चादर, जिस पे फूल खिले हैं
किसने सुकून से मेरा बिस्तर लगा दिया

कर गुज़रने को उठा था, कुछ देर पहले
उनकी कारगुज़ारी ने फिर से सुला दिया

तितलियां सारी मेरे तकिये पे आती हैं
मैंने खुशी से, उसका पता बता दिया

आती है खूब नींद, मुझे थक के सोने पे
आये जो उनके ख्वाब, 'हम' फिर से जगा दिया

ख़्वाब जैसी ज़िन्दगी हो, अरमान है यही
सारी हक़ीक़तों को जैसे भुला दिया।

वक्त का सबब

खुद के ख्वाबों को कैसे पाला था
खुद की तमन्ना को कैसे संभाला था।

अब है कि नए ख्वाब पलते ही नहीं
जो पा लिए अब संभलते नहीं हैं।

मिल भी जाएंगे तो क्या हो जाएगा
ये सोच आजकल वे संवरते नहीं हैं।

जिन गलियों की हसरत थी सदा से
उन्हीं गलियों से अब गुजरते नहीं हैं।

देख ली सूरत जो गौर से उनकी
अरमानों के शोले अब दहकते नहीं हैं।

वक़्त गुजरने का सबब इस कदर हुआ
सूखे फूल किताबों में महकते नहीं हैं।

दोस्तों की दुश्मनी

दर्द होता है उन्हें, जो हम मुस्कुराते हैं
ये दोस्त है मेरे जो दुश्मनी निभाते हैं।

उनकी हसरत हमारी फितरत ना हुई
बस इसी ख्याल से वो रूठ जाते हैं।

पूछते हैं लोग उनसे सवाल हक़ीक़त का
वो बड़ी मासूमियत से टाल जाते हैं।

जान ही जायेगी ये दुनिया एक दिन
कैसे वो स्याह को सफेद बनाते हैं।

शिकायत नहीं हुई आज तक हमें
कितनी शिद्दत से 'हम' रिश्ते निभाते हैं।

ज़िंदगी में तमाम

हक़ अदा मैंने किए हैं, इस कदर ज़िंदगी में
तान कर सीना खड़ा हूं आप ही की बंदगी में।

मेरी कुछ कह ना सका, बस आपकी सुनता रहा
खुद का ख़याल आया नहीं, इस तमाम ज़िंदगी में।

सारे मतलब बता दिए, शहर भर के पंडितों ने
मतलबी क्यूंकर हुए हैं, सारे बंदे ज़िंदगी में।

कंधा है मेरा और बंदूकें उनकी अपनी है
ऐसे बहादुर खूब मिले, मुझको जंग-ए-ज़िंदगी में।

चांद, आसमां, तारे बादल, सारे तेरे अपने हैं
दिल बड़ा करके पाले, 'हम' अपनी ज़िंदगी में।

ख़याल तेरे

फलसफे हैं ज़िंदगी के, और शब्द मेरे
कुछ कड़वी हक़ीक़तें हैं और ख़्वाब तेरे।

ज़िंदगी को देखना आता नहीं था इस कदर
गीत मेरे बन गये हैं अब ख़याल तेरे।

कैसे बनेगी बात अपनी, जान मैं पाता नहीं
राह के रोड़े बने हैं, कुछ हिसाब तेरे।

साथ में ले के चले थे, जिन सवालों को कभी
इस मोड़ पर आके बने हैं, अब जवाब तेरे।

इन अंधेरों में रोशनी को, थामी थी मशाल मैंने
अब हाथ मेरे तीरगी है, और मशाल तेरे।

बच के निकलोगे

यादे हैं बस, यादों का क्या करोगे
सूखे फूल किताबों के झोली में भरोगे।

भरोसा रहे खुद पे बस इतना कीजिए
दूसरे के भरोसे खुद, बूंद-बूंद झरोगे।

धरती से मुहब्बत की तो आसमां बनोगे
मिल न सकोगे कभी, दूर से तकोगे।

प्यास जितनी धरती, बूंद जितना जल
बादल से झूमकर, हर बार बरसोगे।

मिल भी जाओगे ग़र खुद ख़याली में
मुस्कुराओगे 'हम' बच के निकलोगे।

दुनिया अगर सुहानी है

दुनिया अगर सुहानी है, तो ये आपकी कहानी है
मशगूल हूं आप ही में, आप ही को सुनानी है।

सोचते रहना आपको, सदा अच्छा लगा
ये बातें मगर अब, जमाने से छुपानी है।

हर कोई कर लेगा, आपको पसंद
मुसीबत तब है, जब ज़िंदगी बितानी है।

अदावत है जो खुद अब, पतवार बनेगी
हमें भी खुद से, दुश्मनी निभानी है।

किसको सुनाएं अब, कौन ये सुनेगा
किसके मतलब की, 'हम' ये कहानी है।

जिक्र है ना फिक्र है

जिक्र है ना फिक्र है, फिर भी हमारे हैं
हैरां हूं ज़िंदगी कैसे रिश्ते तुम्हारे हैं।

बिछ गये जो चादरों से, वो ना चाहिए
है नज़र में आसमां के जो सितारे हैं।

रूप से बदल गये, उम्र से वो ढल गये
चढ़ गये जो आंख में, दिल में उतारे हैं।

साथ चल रहे हैं, पता नहीं कौन है
साथ रह गये 'हम', वो ही हमारे हैं।

आप देख लीजिए आप सुनाइए
हम हैं ही कौन, आपके पुकारे हैं।

मुस्कुरा के कह दिया

होता है, होता है, मुस्कुरा के कह दिया
कौन कितना रोता है, मुस्कुरा के कह दिया।

साथ तो चलते नहीं थे, मेरे ही अज़ीज़
दूर तक ना चल सके तुम, मुस्कुरा के कह दिया।

छेड़ देने को बने थे, जो मेरे दिल ही के तार
गीत कोई हो ना सका, मुस्कुरा के कह दिया।

जीने को ये ज़िंदगी है, जी लीजिए ऐ हुजूर
एक पल भी जी ना सके, मुस्कुरा के कह दिया।

उम्मीदों से भरके 'हम' आये थे तेरे दर पे
आइयेगा फिर कभी मुस्कुरा के कह दिया।

प्यासा ही रहे

मन है कि प्यासा ही रहे
ये संसार है प्यास का नाम
खुद ही नाम को क्यूं ना कहे
मन है कि प्यासा ही रहे...

डूब गये जो इस मन में
खोजा केवल जीवन में
पाये जो तट खड़ा रहे
मन है कि प्यासा ही रहे...

दिख जाए जो वो भी प्यास
मिल जाए वो, तो भी प्यास
रह जाये 'हम', प्यास रहे
मन है कि प्यासा ही रहे...।

किसे दोगे

माटी जो बेच दी, फिर पानी खरीदोगे
आने वाली पीढ़ीयों को क्या जवाब दोगे
ना चिड़िया, ना गिलहरी ना कबूतर आते हैं
दादी मां के रखे दाने फिर किसे दोगे

चौक की जामुन काट दी, तोते कहां आयेंगे
बाग में इमारत टांग दी, आम कहां खायेंगे
रंग जाते हैं अक्सर, रंग में हवाओं के
बदले हुए मगर, ये जज़्बात किसे दोगे
दादी मां के रखे...

लड़ते हैं जमीं के लिए, खूब अपने भाई से,
देख रहे हैं बच्चे अपने, खिड़की पराई से,
बेच के जाएंगे, जब मालिक नौकरी पे
बदले हुए मगर, ये हालात किसे दोगे
दादी मां के रखे...

चैन तो कहते हो दिल का तुम इसे,
कैसी है ये वहशत, ये पता किसे
दिल में दबा के कमजोरी का आलम
मुसीबतो के 'हम' जंगलात किसे दोगे,
दादी मां के रखे...।

कितने अकेले हैं हम

बहुत दूर से आंखों के नूर हो जाओगे
सोचा ना था इक दिन दूर हो जाओगे।

जिस जमाने से दुश्मनी की थी
उसी जमाने में काफूर हो जाओगे।

सोच तो लो कितने अकेले हैं हम
अपने दिल को फिर क्या किस्से सुनाओगे।

क्या सोच के बने थे हमसफर 'हम'
मिलोगे सपने दिखा के रूठ जाओगे।

दर्द ही रह गया है अब मुहब्बत में
कभी 'हम' दिखायेंगे कभी तुम जताओगे।

जो ना समझे

इक तड़प तक ना समझ पाओगे
क्या खाक तुम दिल लगाओगे।

कसक किसे कहते हैं जान नहीं पाते
कैसे किसी पे जान लुटाओगे।

दर्द देखते किसी का बैठे रहते हो
अब ना कहना के हमदर्दी निभाओगे।

याद तक 'हम' आते नहीं अकेले में
ज़िंदगी भर कैसे साथ चल पाओगे।

पत्र हरे हैं

मित्र चित्र के पत्र हरे हैं
सत्र मौन अतृप्त धरे हैं।

पतझर बसंत ऐसे करे हैं
शाख-शाख से फूल झरे हैं।

धरती हरी, धरती परे हैं
प्रसन्न हृदय में स्वर्ग भरे हैं।

पंछी घटाएं उड़ान भरे है
प्यासे मन को तृप्त करे है।

नदी नाले उफान भरे हैं
प्रेम भरा ही एक तरे है।

प्रेम आस में सुगंध भरे हैं
हाल बुरे पर लोग खरे हैं।

चेहरे को ताकते हैं

रात भर जागते हैं, दिन भर भागते हैं
ज़िंदगी तुझसे, थोड़ा सुकून मांगते है।

ख्वाबों से दोस्ती है, और मुहब्बत खुद से
जाने क्योंकर उनसे क्या-क्या मांगते हैं।

कमा लिया जो तूने, तो भी कमी रहेगी
'आ' की मात्रा है, फिर 'ई' की जांचते हैं।

जिसने नहीं दिया, तब जवाब कोई
वे, सवालों की अब धूल फांकते हैं।

नींद आंखों में नहीं है, अरमानों की हुई
'हम' हैं कि बस उनके चेहरे को ताकते हैं।

नहीं सुनता सदा

नहीं सुनता सदा कोई, न वो आवाज़ देता है
खुद को सुनाने को, अब उसका नाम लेता है।

कसक तन में उठे चाहे, दर्द मन में होता हो
परेशां है मुझसा कोई, वो पहचान लेता है।

ज़रूरत नहीं किसी की, यही तो बेरुखी है
ज़रूरत में तो इन्सां दामन थाम लेता है।

डरते थे नाम लेने से, उन दिनों जिसका
वो साया है, 'हम' चेहरे का नाम लेता है।

होने को तो नाम है एहसास भर का
जो आशिक है वो मुहब्बत नाम देता है।

आनन्द ताल में

मौन तपस्या करने से संतोष आता है
मन मयूर आनन्द ताल में गोत लगाता है

डूब–डूब कर उठते हैं, जो ज्वार हृदय तल में
साक्षी रह के कर्म करे, रुचि नहीं फल में
ऐसे आनन्द में रत मन निश्छल हो जाता है
मन मयूर आनन्द ताल में...

मेरा नहीं कुछ दुनिया में मान नहीं पाता है
जो मिलता अपनेपन से कुछ देकर जाता है
बस देने के ही स्वभाव से तू सब कुछ पाता है
मन मयूर आनन्द ताल में...

है प्रतिष्ठा मनुष्य जीवन की इस उपवन में,
मन में पुष्प खिले चाहे, वो रहे किसी वन में,
स्वार्थ रत मन है पशु सम, वो निर्जन पाता है
मन मयूर आनन्द ताल में...।

होते हैं लोग क्यों

दुनिया बसी हुई है, उजड़े हैं लोग क्यों
बैगरत सा पसीना, महके हैं लोग क्यों।

ज़िंदगी सारी बहादुरी में गुजारी
मरते समय ही, ऐसे डरते हैं लोग क्यों

हंसते रहे जमाने भर पे लोग जो
खुद पे आ लगी तो, रोते हैं लोग क्यों।

कहने को जब दास्तां है उम्र भर की
दो ही पल का किस्सा होते है लोग क्यों।

करने चले थे भला, जब दूसरों का वो,
खुद का किया, और लौट आए लोग क्यों।

पर्दा उठा नहीं था और कर गुज़र गये
दिखाने भर को 'हम', करते हैं लोग क्यों।

बल न गया

बल न गया रस्सी जो जल गई
हवाएं चलाये से चलाई न गई

ऐंठे हुए रह गए जिस्म भर
रूह तो कभी बुलाई न गई

पानी रहा नहीं, न जुताई का शऊर था
फसल पुरखों की तुमसे खाई न गई

चली नहीं हवा फ़कत ये ग़म न था
परवाज़ भी परिंदों से बुलाई न गई

ज़र्रा नवाज़ी हमारी जो सुनते रहे तुम्हें
तुमसे तो आवाज़ भी लगाई न गई।

अतुकांत

दोस्त

चार चेहरा किताब पर 18 हज़ार हो
एक पन्ना पसंद पर भी 6 हज़ार हो
नये रिश्ते के जैसा तुम बुखार हो
कहने को ही बस बेशुमार हो
अन्तर्जाल संबंध के यार हो
दोस्ती का जैसे ज्वार हो
पसंद टिप्पणी बांट हो
फेसबुक कमाल हो
दोस्त बेमिसाल हो।

कुर्सी

आदमी कुर्सी पर नहीं बैठता
कुर्सी आदमी पर बैठती है।

कुर्सी के होते हैं दो हाथ
एक कमर और चार पैर
ढांचा तो होता है खाल नहीं
रक्त मांस और बाल नहीं
कुर्सी कुछ महसूस नहीं करती
जिंदा रहती है कभी नहीं मरती।

कुर्सी खुद कुछ नहीं करती
वरन करवाती है सब कुछ
कभी कुछ महान कभी तुच्छ
ये मिलती है या छीनी जाती है
कोई बनाता है किसी को मिल जाती है
है तो निर्जीव पर आती जाती है
है निष्प्राण पर प्राण ले जाती है।

कुर्सी के नहीं होते बीबी बच्चे
पर उजाड़ती है कईयों के घरौंदे

नहीं होते इसके दोस्त या दुश्मन
पर ये बहुतों को कराती आचमन
कुर्सी नहीं होती चोर या साहूकार
पर ये रखती है हिमायती पैरोकार।

कुर्सी कभी कुछ नहीं करती
कुछ महसूस भी नहीं करती
कुर्सी न हंसती है ना रोती
कुर्सी कभी खाली नहीं होती
इसलिए कुर्सी डरती भी नहीं है
आदमी डरता है इसके आने जाने से
रोशन गुलिस्तां के रीते खजाने से।

जंगल

जंगल मिला था हमें
उन किताबों की तरह
जिसे शैतान बच्चे नहीं पढ़ते
परीक्षा आने तक
हम भी नहीं पढ़े मटरगश्ती में
तरक्की रुकी है अगली कक्षा तक।

हरियाली और छाया मां जैसी
मिलती है बस गोद बैठने पर
गोद भी न हो पास तो रहे
चित्रों की मां तक भी देती है
कलेजे को ठंडक
तो हम एक फोटो लगाए बैठे हैं।

बड़े आदमी और बड़े पेड़
देते हैं एक सी छाया
नहीं कोई अपना पराया
छोटे ठूंठ करते शिकायत
पानी नहीं दिया मुझे
अब छाया भी नहीं तुझे।

मां का पालना रहता नहीं सदा
मिला बिना कुछ किये जो
जन्मने के नाम पर
कलेजे की ठंडक बन
टंगी रहती है मां फिर भी
घर की दीवार पर।

मां से जंगल उजड़ने तक
गर नहीं पड़ती ज़रूरत
दुनियादारी के पौधों की
या फिर पेट की अगन
बुझाने को ज़रूरत है
खुद के सींचे बीजों की।

लज्जा राखो गोबिंद

आधा किलो बाजरा और एक किलो मूंगफली ले कर आये
पोते को देख दादी की आंखें नम हो आईं
दो लाख की मूंगफली होती थी अपनी ज़मीन पे,
पूरी उम्र घर के लिए कभी मोल न ली
अब पोती कह रही है–
वो शादी भी शादी नहीं जिसमें पास्ता न हो
तेरे दादा कहते रहे वो घर भी कोई घर नहीं
जिसमें गाय खूंटे से न बंधे
वो आंगन नहीं जिसमें नीम की निम्बोली न गिरे
इज़्ज़त नहीं उसकी जिसको गांव में न्योता न हो
सारे गांव गुआड़ी के भाई बंध बुलावे होते थे
पीले चावल में गणेशजी न्योतने न आवै तो दूर के कहाते थे
गांव के जीमण में पुरसगारी न करने वाले जवान
असामाजिक कहलाते थे
आज तो चाचा–ताऊ, मामा, भुआ, मौसी को
बिसराये लोग इज़्ज़तदार कहला रहे हैं
अब एक प्लाट में सोलह धन्ना सेठ
फ्लैटों की आधे पैसे में रजिस्ट्री करा रहे हैं।
लज्जा राखो गोबिंद!!

वक्र गति; सद् गति

मैं बेहतर हूं, मैं अच्छा हूं कार्यक्रम में
चुनाव में आदमी होना
दलित, पिछड़ा और मुसलमान
आदमी के कई नाम

नए ड्रामे, पटकथा और कहानी
नए सह नायक, चरित्र अभिनेता
लोकतंत्र की फिल्म के लिए
इवेंट मैनेजर, हावर्ड के प्रोफेसर ने
समाजवाद को चुनावी ज़रूरत भर बनाया
समाजवाद और पूंजीवाद इकट्ठा
गरीबी ने गहने उतार दिए थे
वो फिर गेहूं, तेल, दवा के लिए तैयार था

पिता से अलग हो,
पिता से लड़ कर कोई
पिता से अलग दिखा रहा था।
चाचा, भाई–भाभी को दुश्मन बता रहा था।
कुनबा बढ़ाने भर को
भाई बना रहा, माई बुला रहा था।

कमज़ोरी की ताकत जानकर कमज़ोर होना चाह रहा था
वजूद की ज़मीन पर नाचता, खिलखिला रहा था
फायदे की सोच, मूर्ति लगा रहा था।

है आदमी होशियार, पर मूरख दिखा रहा था
सही गलत सब समझ पा रहा था
भविष्य के गर्भ में छुपा वर्तमान
काल अपना चक्कर चला रहा था।

बातें

होने को ज़माने भर की हैं बातें
किसी बात का कोई मतलब नहीं हो
ऐसा नहीं है
बातें कहने को होती हैं
सुनाने को भी होती हैं
ज्यादातर बताने को होती हैं
मतलब जब नहीं है बातों का
केवल जब वो काम की न हों
बेमतलब कहीं जाएंगी तब

वैसे वजन आदमी का नहीं बात का देखा जाता है
कोई कैसे बात का रिश्ता निभाता है
और ज़िंदा रखता है रिश्ते को
तो कोई कैसे रिश्ते निभाने में मर जाता है
ये भी कोई बात हुई भला
बात-बात में क्या मरना

बातों-बातों में क्या-क्या नहीं हुआ
या बातों बातों में कहां से कहां पहुंच गए
बातें ही हैं जो खत्म नहीं होतीं
बस शुरू होनी चाहिएं एक बार।

आओ हम दिखें समझदार

आओ कि खून के कतरे की बिना जांचें रिपोर्ट लिख दें
कठिन शब्द बस बिना किसी मशीन के तकनीक या तार से
ये कहते हुए के ये दर्द है नापा न जा सकेगा
आओ हम एक्स रे का काला कागज़ जड़ दे।।

आओ के हम उतार दें चमकते जूते
और ढूंढ लें पुरानी चप्पल तोड़ें फिर
सिलवाएं चौराहे पर पाखंड को
ताकि हम लोग इन्हें पहन के महंगे रेस्तरां में जा सकें
ये बताने कि दर्द हमारे साथ है।।

आओ के हम कुर्ते को पकड़ के पुरस्कार पाएं
या समझौते के पैग में झंडे को भूल जाएं
लोगों से छुपाने को ये फायदे का सच
ज़ोर से चिल्लाएं स्थापित बहुमूल्य बहुमत पे
जिससे लोग हमें देखें और पहचान जाएं।।

आओ के हम व्यक्तिगत हो जाएं,
सामूहिकता की बातें भी अकेले आदमी से करें,
नई जुगत लगाएं बुरा बताएं स्थापित मूल्यों को
और ज्यादा मूल्यवान कहलाएं

जन–जन हितैषी दिख जाएं
आओ के हम शांति के नाम पे लोगों को लड़ायें,
बेच दें अपने डंडे ज्यादा मुनाफे में किसी विदेशी को
फिर हो जाएं निहत्थे सरकारी सहायता के लिए,
आओ हम दिखें समझदार और अपना इतिहास झुठलाएं
अपने वजूद को साबित कर जाएं।

भले लोग

भले लोग
अच्छे वक्त जैसे होते
अच्छा महसूस कराते हमें
भला करते हमारा और न कुछ लेते
और कुछ लादे बगैर निकल जाते

भले ही हमने ध्यान न दिया हो उतना
किया हो नज़रंदाज़ या फिर ले लिया हो हल्का
बोझ भी हमारा खुद ही हटा जाते
ताकि बोध न हो अपराध का हमें
बस मुस्कुराते निकल जाते

शर्मिंदगी में भी याद न दिलाते
बल्कि हमसे नज़रें चुराते
जैसे किया हो अपराध उन्होंने
और सामने आ गए हम बुरे वक्त से
कुछ न जताते निकल जाते

दुख को खुद का मानते अपना
मतलब न हो मदद न सहायता

जैसे बताने से होंगे दुखी हम
और हो जाएंगे वो छोटे
कुछ न दिखाते निकल जाते

कोई जतन काम न करे
सिवा मलाल के यों
कुछ न दे सके अब वक्त भी ज्यों
बड़े हो गए वो छोटा दिखा के
बस याद आते निकल जाते।

मिट्टी के पहाड़ों पर टंगे गोल पत्थर

मिट्टी के पहाड़ों पर टंगे गोल पत्थर
नहीं है नदी बहने की गवाही भर ही
बदलते रास्तों और गिरते स्तर का प्रमाण भी है
या फिर एक सूखी नदी की कहानी

मुहाने पे बसे लोगों की फितरत और
सागर के तट पर बढ़ती आदम जात
भोलेपन से चंटपने
ऊंचाई से नीचे जाने का दर्शन
अच्छाइयां जैसे मोती रह जाएंगी पलेंगी सीपियों में बस

मुश्किलें ऊंचे रह पाने की हो जाती हैं बयां
या के सत्य भी पहाड़ से शुरू हो के दरिया हो जाएगा
मैदान में आसान जीवन के भरोसे बढ़ेगी परेशानियाँ
और आदमी आदमियत से दूर हो आदमी को खाएगा

पहाड़ के उजले रंग को
मैदानी सागर तट पे काला होना है
जैसे ज़माने भर से बह के आये
पानी को खारा होना है

समझ मे आ जाता है अचानक
ऊंचा चढ़ना कठिन है और फिर
बने रहना ऊंचाई पर और भी कठिन।

टंगे हैं हर पहाड़ पर अच्छी भली साधना के शालिग्राम
और कीच खारे जल की गहराइयों में रखी हुई
सीपियों के मोती बन के चमक रहे हैं
सुंदरियों के गले का हार
हमेशा नहीं तो कई बार।

क़िस्मत शहर की

होती है हर शहर की क़िस्मत
कि उसे कौन मिलेगा
कहां बलवा तो कहां चैन पलेगा
कौन कौन बनेगा इज्जतदार और कौन लूटेगा
कौन आएगा कमाने और कौन बसेगा

होती है हर शहर कि किस्मत
उसमें महल बनेंगे या कि बगीचे कैसे
उसे बसायेंगे वास्तुविद या ऐसे वैसे
पनपेंगे व्यापार या विलासी
या जी लेंगे लोग जैसे तैसे

होती है हर शहर कि किस्मत
होगा उसका इतिहास खुद का
या वो खुद इक इतिहास बनेगा
बनेगा राजपथ या बस गरीब पलेगा
पनपेंगे लोग या बस मुसाफ़िर गुजरेगा

होती है हर शहर कि किस्मत
कि वहां क्या उपजेगा क्या रहेगा

क्या रहेगी कमी और क्या मिलेगा
वो रहेगा किसके हाथों में
और वहां कौन जन्मेगा

होती है हर शहर कि किस्मत
कि वहां कौन करेगा और कौन भरेगा
या कि अपनी फ़ितरत खुद भुगतेगा
धीरे धीरे या तेज़ तरक्की करेगा
लाखों किस्मतों को कौन बदलेगा।।

अलग इज़्ज़त, अलग लिहाज़

मेथी के परांठे पालक की सब्जी और
बथुवे का रायता सब जुड़े हैं मौसम से,
अपना–अपना स्वाद ले काम आ रहे
शाक पात है सब हरे–हरे हैं
हालात अलग और नाम करे हैं

बथुआ उगता अपने आप
पानी भी न पूछा जाता अलग से
गेहूं के साथ लग जाता उसका पानी पी
अलग से जो खेत में लग जाए तो
साफ कर दिया जाता।

पालक क्यारियों में उगता मेहनत से
सब्जी व्यंजनी पकौड़े या पनीर के साथ
पंच–सितारा दर्जा पाता
चटक रंग और अपने अंदर रखे हुए
आयरन की इज्ज़त से देखा जाता।

मेथी मसाले सी नस्ल में पहचान पाती
जतन से उगाई और सींची जाती

किस्मत ऐसी की सूखी हुई भी इज़्ज़त पाती
खुशबू होने से है नाम कमाती
साग नही तो मसाला हो जाती।

इंसान की कहानी सी लगते सब
खेत पानी रंग और मौसम
खुश्बू और गुण स्वाद के हिसाब
नसीब की औषधि या खर पतवार
अलग इज़्ज़त और अलग लिहाज़।

आग्रह और दुराग्रह

हम ही हैं जो
अपने आग्रह और दुराग्रह को
लादे हुए चल रहे हैं
सच्चा जीवन और झूठे दिलासों के बीच
चुनी हुई दीवार की ईंट से हैं हम
जो जमी है मसाले की सीमेंट से
पर खुद दीवार कहला रही है
बिना चूना लगाए
दीवार भी नहीं होगी
जब भी बनेगी दीवार
जब भी लगेगा चूना
जब भी बनेगा मसाला
भट्टे पर पकेगी ईंटें
अपने ही आग्रह और
दुराग्रह की
बनाये चाहे कोई भी
या फिर इस्तेमाल करे
टूटेगा नहीं
जब तक आग्रह या दुराग्रह।

आकाशवाणी की उपज

देवकी को अपने रथ पर ले जाते
कंस को सुनी आकाशवाणी से पूर्व तक
सब ठीक था।
उच्चारित हुआ था जिसमें
ले जा रहा है खुशी-खुशी जिसको
इसी देवकी की आठवीं संतान
वध करेगी
सुनते ही गया सब बदल
होती नहीं आकाशवाणी गर
जिसके पूर्व सब ठीक था
समझाया किसी ने आठवें तक तो ठहरो
मान भी गया था कंस
जिसके पूर्व तक सब ठीक था
फिर नारद दोनों तरफ से रेखाएं गिनकर
आकाशवाणी के समर्थन में लाए दस्तावेजी गवाही
या फिर तस्दीक कर गए नक्शा मौका
अपने ही भानजे से भयभीत कंस के मन का
गोकुल के सब शिशुओं के वध का राज्यादेश
या फिर इससे पूर्व उग्रसेन को सपत्नीक कारावास
या पूतना का राजकीय कार्य सम्पादन

जिसके पूर्व तक सब ठीक था
देवकी के कारावास
पराई मां का दुग्धपान
जन्म से पूर्व सात भाई बहिनों का खोना
ग्वालों संग पालन
गैय्या संग लालन
राधा संग विहार
सुदामा संग आहार
एक आकाशवाणी की उपज ही रहे
जिसके पूर्व तक सब ठीक था।

एक पैगाम है जो देना है

हमला ही है जो होता नहीं किया जाता है
किसी अंध अस्तित्व पर,
जो जी रहा है हमलावर से अलग
हमला होता है ये बताने के लिए
कि मैं तुमसे बेहतर नही परेशान हूं
अपनी मुसीबतो को दिखाने को नही
बल्कि जताने को कि मुसीबत के पीछे तुम हो।

हमलावर नहीं जानता दिखाने,
बताने और जताने का मतलब
न तोला न रत्ती का माशा
बस ये है एक तमाशा
जब तक दिखाता है तुम मानते हो
कि मैं हूं पूरा, स्वतंत्र और साबुत
ये अहम तुष्ट होता, एक भ्रम पुष्ट होता।

कबीला मानता इसी से बड़ा गुण्डा
मूरख सोचते है बहादुरी काम आएगी
सभ्रान्त सोचते परेशान करेगा
या कि मैं इस्तेमाल करूंगा एक दिन

वो डालता दुश्मनों के खिलाफ टुकड़े
देने लगता कुछ चंदा और दुखड़े
इसी गुंड़ई को चंदा मिलता
यही देख कुनवा खिलता
इसी खुशी से कबीला चलता।

ऐसे चलता कारोबार सोच का
हमला चलता रहेगा गुण्डा पलता रहेगा
मैं ज्यादा हूं, मैं बेहतर हूं
मैं जियूंगा ज्यादा तुमसे
इस बेहतर दिखाने के पीछे
इस परेशान बताने के पीछे
अहम की तुष्टि नहीं, कबीले की पुष्टि नहीं
अपने कायदे नहीं, किसी के फायदे नहीं
एक चंदा है जो लेना है
एक पैगाम है जो देना है।